© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

पुष्पा सक्सेना की कहानियां – कथ्य एवं भाषा

सुमन बाला

भारत के इलाहाबाद शहर में जन्मी एवं पली बढ़ी पुष्पा सक्सेना का हिन्दी कहानी साहित्य में महत्वपूर्ण नाम है। इलाहाबाद में पली बढ़ी पुष्पा सक्सेना लम्बे समय से अमेरिका में रह रही है, और अमेरिका में रह रहे भारतीयों के जीवन पर आधारित लेखन में रत है। ''पुष्पा सक्सेना ने लगभग 25 कहानियों की रचना की है जिसमें जीवन प्रसंग एवं सामाजिकता का अनूठा मिश्रण है''। समाज वर्णन साहित्य का आधार कथ्य होता है। साहित्यकार समाज में रहते हुए प्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष से अलग अपनी अभिव्यक्ति को लेखनी का आधार बनाता है। इसके महत्वपूर्ण विषय अपने समाज से जुड़े हुए समाज के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक मुद्दों से सम्बन्धित होते हैं। ''लेखिका पुष्पा सक्सेना प्रवासी भारतीय लेखिका है। उन्होंने अपने आस–पास के भारतीय जीवन मूल्यों और अमेरिका जीवन मूल्यों की टकराहट को विषेष कथ्य के रुप में अपनाया है''। ये कहानियां भारत के ऐसे षिक्षित समाज की कहानियां है, जो उच्च षिक्षा व बेहतर कैरियर और बेहतर जीवन के लिए भारत में पैदा होने पर प्रवासी भारतीय बनने की ललक रखता है। प्रवास शब्द 'वास' धातु में प्र लगाने से बना है। 'वास' का प्रयोग निवास अथवा रहने के लिए किया जाता है। परन्तु 'प्र' उपसर्ग के रुप में लगाने से इसका अर्थ बदल जाता है। ''विषेष रुप से प्रवास का अर्थ विदेष गमन और विदेष में रहने के अर्थ में किया जाता है''। भारत देष गॉवों का देष है, आज भूमंडलीकरण के प्रभाव से बहुत सारे भारतीय विदेषी जीवन की चकाचौंध से प्रभावित होकर विदेषों में बसने की इच्छा से अपने कार्य और व्यवसाय का चुनाव करने और विदेष में बस जाते है। परन्तु कालांतर में उनकी सोच और जीवन शैली का परिवर्तन और उनके कार्य का दबाव उनमें जीवन के प्रति घृणा का भाव पैदा कर देता है। चकाचौंध की बिजली गुल हो जाती है। भारत में स्वर्ग सा लगने वाला जीवन नाटकीय बन जाता है। जीवन से उनका मोह भंग हो जाता है। अपनी मृगतृष्णा की उनको बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। वह अपनी भारतीयता की ओर लौटना चहाता है लेकिन यह संभव नहीं हो पाता लेखिका पुष्पा सक्सेना ने इसी विडम्बना को अपना केंद्र कथ्य बनाया है। 'कमल किषोर गोयनका' 'पुष्पा सक्सेना' की कहानियों को लेकर कहते है, ये कहानियां व्यापक प्रवासी परिदृष्य का उद्घाटन करती है जो अमेरिका के मायाजाल को खोलता ओर मृग तृष्णा के सत्य को उद्घाटित करता है''।

उसके हिस्से का पुरुष, सूर्यास्त के बाद, उसका सच, पीले गुलाबों के साथ एक रात, तुम्हें पाकर पुष्पा सक्सेना के महत्वपूर्ण संकलन है। इनके अतिरिक्त पुष्पा सक्सेना की संकलित

कहानियां, वैलेंटाइन डे, प्यार के नाम, प्यार की शर्त, मीत मेरे, एक नया गुलाब तथा अन्य कहानियां पुष्पा सक्सेना की महत्वपूर्ण कहानी है।

श्रीमती पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य, साहित्य में एक नवीन प्रकार का साहित्य है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को साहित्य में उसी तल्लीनता के साथ पिरोया है जिस तल्लीनता से उन्होंने सीखा है। '' पुष्पा सक्सेना की रचना प्रक्रिया के कुछ प्रमाण मिलते है, यद्यपि इस संदर्भ में कुछ भी विस्तार से कहना कठिन है क्योंकि रचना प्रक्रिया काफी महत्वपूर्ण होती है''। भारतीय संदर्भ में लिखा पुष्पा सक्सेना का साहित्य वही हैं कहते हैं बचपन में मनुष्य जिस भाषा में व्यक्ति संस्कार प्राप्त करता है, वह उसी भाषा में प्राकृतिक अभिव्यक्ति कर सकता है। उसके देष की मिट्टी की सोंधी खुषबू उसके साहित्य में महकती है और इतना अपनी निजता को वह इसी भाषा में अभिव्यक्त कर सकता है। पुष्पा सक्सेना के साहित्य के प्रति आसक्त होने का यह कारण भी है। पुष्पा सक्सेना के इस प्रकार के साहित्य ने हिन्दी साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। कहना संगत होगा कि पुष्पा सक्सेना के साहित्य का महत्व इसलिए भी और बढ़ गया क्योंकि उन्होंने यू0एस0ए0 की परिस्थितियों में रहने वाली भारतीय संवेदना, जीवन और सृष्टि का वर्णन किया है। यहॉ आदमी के जीवन मूल्य और उसके संस्कारों का परिस्थिति का संघर्ष होता है, टकराहट होती है और उसके दृष्टिकोण कुंठित करने का काम करती है, यर्थाथपरक परिस्थितियॉ और भूमंडलीकरण उसके लिए जद्दोजहद बन जाता है।'' पुष्पा सक्सेना ने इसी को अपने साहित्य का कथ्य बनाया है। पुष्पा सक्सेना के कहानी साहित्य को अपना वैषिष्टय बनाया है जो उसकी संवेदना परिवेष और जीवन दृष्टि के सरोकार के कहानी साहित्य को लेकर आगे बढ़ता है। पुष्पा सक्सेना प्रवासी साहित्य में महत्वपूर्ण कथाकार की भूमिका का निर्वाह करती है। इस संदर्भ में कमल किषोर गोयंका का मानना है ''किसी भी प्रतिभावान रचनाकार की सृजनात्मकता और उसकी श्रेष्ठता को हमेषा के लिए दबाकर रखना संभव नहीं है''। पुष्पा सक्सेना ने भारत में रहकर यह जाना था कि वह सात समुंदर पार वाला जीवन कैसा आकर्षक लगता है, वहॉ की समृद्धि और सुख सुविधाएं कैसे लोगों को आकर्षित करती हैं। परन्तु जब भारतीय, मैं भारतीय विषेष अर्थ में प्रयोग कर रही हूँ, वहॉ पहुंचकर वहॉ के खट्टे–मीठे अनुभव उसकी वास्तविकता से परीचित होते हैं तो स्थिति परिवर्तित हो जाती है। अपने परिवार, समाज, देष और अपने भारतीय सरोकारों से अलग होने पर उनको विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामाना करना पड़ता है। वहॉ उस चमकीली चकाचौंध की पुष्पा सक्सेना ने इसी को अपने साहित्य का कथ्य बनाया है। पुष्पा सक्सेना के कहानी साहित्य का अपना वैषिष्टय है। वास्तविकता से उनका साक्षात्कार होता है तो परिस्थितियॉ और सोच दोनों कुंठित हो जाती है। यहॉ परिस्थिति जीवन शैली का दुयोतना है। पुष्पा सक्सेना का साहित्य इसी परिस्थिति का साहित्य है। पुष्पा सक्सेना की कहानियॉ व्यापक दृष्टिकोण का उद्घाटन करती हैं। यहॉ का परिदृष्य जीवन की तमाम संवेदनाओं को लेकर चलता है। प्रत्येक कहानी का कथ्य अपनी स्वतंत्रता के लिए समर्पित है। यह स्वतंत्रता जीवन की विभिन्न

प्रकार की सच्चाई का बयान है और जीवन का द्वंद भी है। पुष्पा सक्सेना की कहानियों के अध्ययन और अनुभव से इस प्रकार के कथ्य को विकसित किया है। लेखिका यह जानती है कि कहानी के लिए कथ्य के विचारों, भावों और अनुभवों के रचनात्मक संकल्प के लिए यह आवष्यक है। लेखक का अनुमान और कल्पना इसके मध्य न आए वास्तविकता इसका आधार बने, यही वास्तविकता। उस संवेदना से रुबरु करवाने का कार्य करती है जो कथ्य को लेकर आगे बढ़ता है। इसलिए पुष्पा सक्सेना अपने सरोकारों को बहुत षिद्धत से व्यक्त करती है। ''प्रस्तुतिकरण में इनकी कहानियॉ अनन्य और हटकर है। इनका आधार जीवन के प्रति गहन जीवन दृष्टि और जीवनासिक्त है। हर कहानी को पढ़कर लगता है कि जीवन का एक चक्र घट रहा हो और कथाकार तटस्थ भाव से उसकी सृष्टि कर रहा हो''। इस प्रकार पुष्पा सक्सेना का कथाकार के रुप में अनुभूति रुप का स्तर कितना व्यापक और विस्तृत है। कथाकार कितना दृष्टि सम्पन्न है। हर कहानीकार की एक सीमा होती है। अपी उतरी सीमा में पुष्पा सक्सेना बहुआयामी और विविधधर्मी इसलिए हो गयी है क्योंकि जीवन के विविध रंग और नाना प्रकार की झलकियों को उन्होंने अपनी कहानियों में उकेरा है। विदेषों में प्रवासी भारतीयों का जीवन अस्त–व्यस्त अविन्यस्त, प्रकीर्ण और द्वन्द के साथ बिखरा पड़ा है। उसे एक कहानी और कला के फ्रेम में फिट करने के लिए पुष्पा सक्सेना की कलम ने अनेक बिम्बों के पड़ाव पार किये हैं। उसे रुपाकार बनाने और सुविन्यास बनाने में कहानीकार का अपना परिश्रम होता है। एक कलाकार की कलम जीवन के प्रति आसक्त भी होती है और वैयक्तिक जीवन से प्रभावित भी होती है इसलिए समायोजन का अपना महत्व होता है। यह समायोजन ही होता है जो कहानी में अपने पराए से दूर हटकर लोक ह्रदय की बात करता है। यहॉ लेखक एक दम अनासक्त बन जाता है। इसी अनासिक्त में रस गाढ़ा और प्रभावी हो जाता है। पुष्पा सक्सेना की कहानियों की एक ओर खूबी, उनके भाषा विन्यास की भी है। यह भाषा विन्यास उनको रचना कौषल के तमगे से अभिषित करता है। हर रचना में एक कथानक, देषकाल, वातावरण, पात्र योजना के साथ संवादों का निर्वाह करता हुआ भाषा संयोजन के पड़ाव पर पहुंचकर लेखिका की बात को पूर्णत अभिव्यक्त कर देता है। जब बात गद्य की आती है तो हिन्दी के बड़े आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं कि यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध केवल विचार की अभिव्यक्ति हो सकती है, ज्ञान का प्रचार हो सकता है। हालांकि इतने बड़े लेखक/आलोचक की बात में काट नहीं रही, ना ही उनकी आलोचना कर रही, किन्तु अपनी बात के माध्यम से कह रहा हूॅ कि यदि जीवन और जगत में मृद्रा और भाव का कोई महत्व है तो आचार्य जी को कहानी और उपन्यास को पीछे नहीं छोड़ना चाहिए था। खैर पुष्पा सक्सेना की भाषा में प्रवासीपन यानी हिन्दी और विदेषी दोनों प्रकार के शब्दों को संयोजन मिलता। जीवन की गहराई को व्यक्त करती हुई उनकी भाषा सक्षम नजर आती है। ''भाषा का प्रभाव जितना धारदार और प्रभावी होगा कथ्य उतना ही सषक्त और अनुभति प्रवाह होगा। ''पुष्पा सक्सेना की कहानियों में बहुत सारी ऐसी कहानियॉ है जिनका एक अध्ययन भाषा के विभिन्न पहलुओं से

अवगत करवाता है। इस दृष्टि से पुष्पा सक्सेना की कहानियां प्रवासी साहित्य माला में अपनी पहचान से सदैव– सदैव पहचानी जाती रहेगी।

संदर्भ सूचीः–

1 कमल किषोर गोयनका, पुष्पा सक्सेना की संकलित कहानियां, भमिका से
2 वही
3 गोपाल सक्सेना, हिन्दी कहानी का इतिहास पृ0 63
4 कमल किषोर गोयनका, पुष्पा सक्सेना की संकलित कहानियां भूमिका से
5 वही
6 वही
7 वही
8 गोपाल चर्तुवेदी, हिन्दी कहानी की संवेदना पृष्ठ 168
9 परषुराम चर्तुवेदी, हिन्दी कहानी का विकास